

---

# Onkarapuktam Muktisadhanartham Shivarchanopadesham 1

---

## ओङ्कारप्रोक्तं मुक्तिसाधनार्थं शिवार्चनोपदेशम् १

---

### Document Information

Text title : Onkarapuktam Muktisadhanartham Shivarchanopadesham 1

File name : shivArchanopadesham1muktisAdhanArthaM.itx

Category : shiva, shivarahasya, upadesha, advice

Location : doc\_shiva

Transliterated by : Ruma Dewan

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | ugrAkhyah saptamAMshaH | adhyAyaH 13 | 515.1-525||

Latest update : May 3, 2024

Send corrections to : [sanskrit at cheerful dot c om](mailto:sanskrit@cheerfuldotc.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

May 3, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

## ओङ्कारप्रोक्तं मुक्तिसाधनार्थं शिवार्चनोपदेशम् १



कश्यप उवाच -

पुरोङ्कारं मूर्तिमन्तं शिवध्यानपरायणम् ॥ ५१४ ॥

ब्रह्मविष्णवादयो देवा दृष्ट्वा प्रोचुर्मुमुक्षवः ।

देवा ऊचुः

त्वमोङ्कारोऽस्यतस्तत्त्वं त्वयैव ज्ञायते ततः ॥ ५१५ ॥

किं ध्येयं सततं मुक्त्यै तद्विचार्य वदस्व नः ।

श्री ओङ्कार उवाच -

मोक्षार्थं शिव एवैको ध्येयः सर्वैरहर्निशम् ॥ ५१६ ॥

सर्वमन्यत्परित्यज्य सादरं भक्तिपूर्वकम् ।

यः पिता भवतां देवाः स एव शिव उच्यते ॥ ५१७ ॥

स एव पार्वतीनाथ यः सर्वसुरसत्तमः ।

स एव श्रीमहादेवः स एव त्रिपुरान्तकः ॥ ५१८ ॥

स एव वेदजनकः स एवान्धकसूदनः ।

सं एव विष्णुसंहर्ता स एव मदनान्तकः ॥ ५१९ ॥

स एव ब्रह्मसंहर्ता स एवेन्द्रविनाशकः ।

स एव ममसंहर्ता स एवाखिलशासकः ॥ ५२० ॥

एतादृशं शिवं मत्वा सच्चिदानन्दलक्षणम् ।

पूजयध्वं प्रयत्नेन मुक्त्यर्थं सर्वसाधनैः ॥ ५२१ ॥

शिवार्चनं शिवध्यानं शिवनामानुकीर्तनम् ।

शिवक्षेत्रनिवासश्च मुक्तिसाधनमुच्यते ॥ ५२२ ॥

शिवार्चनं च विधिवन्नावावेदान्तसम्मतम् ।

तन्मोक्षदमिति प्रोक्तं महेशेनातितत्त्वतः ॥ ५२३ ॥

--

पुरा पृष्टो महादेवः शिवया ज्ञानरूपया ।

किं मोक्षदमिति प्रीत्या तदाऽऽह भगवाञ्छिवः ॥ ५२४ ॥

श्रीसदाशिव उवाच -

शिवे मदर्चनं ध्यानं मन्नाम्नामनुकीर्तनम् ।

मदिष्टक्षेत्रवासश्च मुक्तिसाधनमक्षतम् ॥ ५२५ ॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते ओङ्कारप्रोक्तं मुक्तिसाधनार्थं शिवार्चनोपदेशं १ सम्पूर्णम् ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् उग्राख्यः सप्तमांशः । अध्यायः १३ । ५१५।१-५२५ ॥

- .. shrIshivarahasyam ugrAkhyah saptamAMshaH . adhyAyaH 13 . 515.1-525 ..

Notes:

Brahmā ब्रह्मा, Viṣṇu विष्णु et al Deva-s देवाः observe the Form of Oṃkāra ओंकार engaged in Śivādhyāna शिवध्यान and are curious to know from him about who should be worshiped in order to attain Mukti मुक्ति. Oṃkāra ओंकार delivers the upadeśa उपदेश about Cultivating worship of Śiva शिव; and, that Śivārcanam शिवार्चनम्, Śivādhyānam शिवध्यानम्, Śivanāmānukīrtanam शिवनामानुकीर्तनम् and Śivakṣेत्रनिवास शिवक्षेत्रनिवास is the means to Liberation (Muktisādhana मुक्तिसाधन). He conveys that upon being requested by Śivā शिवा, the same was also told by Śiva शिव.

Encoded and proofread by Ruma Dewan

---

*Onkaraproktam Muktisadhanartham Shivarchanopadesham 1*

pdf was typeset on May 3, 2024

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

